बी.ए. पार्ट 3
प्रश्नपत्र - पंचम
ऊ० मालविका तिवारी

नचिकेता द्वारा याचित तीन वरों का वर्णन प्रस्तुत करें।

विवेकशील कुमार नचिकेता जब देखता है कि पिताजी जीर्ण शीर्ण गायों को दान में ब्राह्मणों को दे रहे हैं तथा दूध देने वाली पुष्ट गायें मेरे लिए रख छोड़ी हैं, तो वे इस अदेय दान से दुःखी हो जाता है। बाल्यावस्था होने पर भी उसकी पितृभक्ति उसे चुप नहीं रहने देती। अतः वह बालसुलभ चापल्य प्रदर्शित करते हुए अपने पिता वाजश्रवा से पूछ बैठता है - 'तत कस्मै मां दास्यसि ?' (पिताजी आप मुझे किसको देंगे ?" इसी प्रकार कई बार वह पूछता है। उसके पिता खीझकर उत्तर देते हैं कि मैं तुझे मृत्यु को दूँगा। यह जानकर भी कि उसके पिता ने क्रोधवश ऐसा कहा है, वह उनके कथन की उपेक्षा नहीं करता। अपने पिता के वचन की रक्षा हेतु उनके मोहजनित वात्सल्य एवं अपने ऐहिक जीवन को सत्य की वेदी पर निछावर कर देता है। वह सीधे यमलोक पहुँचता है। यमराज के निवास पर पहुँचने के बाद उसे ज्ञात होता है कि यमराज अनुपस्थित हैं। जब तक यमराज से उसकी भेंट नहीं होती है तब तक वह अन्न जल कुछ भी नहीं ग्रहण करता है। इससे भी उसकी प्रौढ़ सत्यनिष्ठा का पता चलता है। उसका शरीर यमराज को दान दिया जा चुका है। अतः उसके शरीर पर यमराज का ही पूर्ण अधिकार है। उसका सर्वप्रथम कर्तव्य अपने को यमराज को सौंपना है। इसी कारण से वह भोजनादि की चिन्ता छोड़कर यमराज के द्वार पर ही पड़ा रहता है। पूरे तीन दिनों के पश्चात् यमराज अपने निवास पर लौटते हैं। वे नचिकेता से एक-एक दिन के उपवास के लिए एक-एक वर माँगने को कहते हैं। इससे अतिथि सत्कार का महत्व प्रकट होता है।

यमराज की प्रतिज्ञा के फलस्वरूप बालक नचिकेता तीन वर माँगता है। वरों के क्रम में भी एक अद्भुत रहस्य है।

नचिकेता का प्रथम वर है – पितृपरितोष। वह पिता के सत्य की रक्षा के लिए उनकी इच्छा के विरुद्ध यमलोक चला आया है। इससे उसके पिता स्वभावतः अत्यन्त खिन्न होंगे। इसलिए उसको सर्वप्रथम आवश्यक यही लगता है कि उसके पूज्य पिता को शान्ति मिले। उसे पूर्णरूपेण ज्ञात है कि पिता की प्रसन्नता ही सम्पूर्ण सुखों की आधारशिला है। पिता देव हैं। बिना इस देव के प्रसन्न हुए किसी की भी अनुकम्पा प्राप्त नहीं हो सकती। यह नियम भी है कि यदि हमारे कारण किसी को खेद हो तो जबतक हम उसका खेद निवृत्त न कर दें तब तक हमें भी शान्ति नहीं मिलती। यह नियम मनुष्यमात्र के लिए समान है और यहाँ तो स्वयं उसके पूज्य पिता को ही खेद है। अतः सर्वप्रथम उनकी शान्ति ही उसको अभीष्ट है जो बिल्कुल स्वाभाविक है। इसलिए सबसे पहले वह पितृपरितोष की याचना करता है —

शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्
वीतमन्युर्गौतमो माऽभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीत
एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥

पितृ परितोष की दृष्टि से वह यह भी चाहता था कि उसका पिता पूर्ण शान्त स्थिति में विद्यमान होकर अपने पुत्र नचिकेता का दर्शन भी कर ले, जिससे कि उसके हृदय में विद्यमान अपने पुत्र सम्बन्धी शोक की ज्वाला भी पूर्णरूपेण शान्त हो जाए और वह प्रसन्न-चित्त होकर अपने उद्दिष्ट कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके। अतएव प्रथम वर में ही उसने प्रथम वर की याचना के साथ ही अपनी यह माँग भी प्रस्तुत कर दी कि 'त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीतः'। यद्यपि उसके अगले दो वर इस बात के प्रमाण हैं कि वह इस संसार में पुनः आने का इच्छुक नहीं था किन्तु केवल पिता के प्रति अपने कर्तव्य के पालन करने हेतु ही उसकी इस प्रकार की अभिलाषा रही होगी। इस प्रकार यहाँ पुत्रधर्म का बड़ा ही सुन्दर समन्वय हुआ है। इस वर की याचना में लौकिक सुख की प्राप्ति का रहस्य है।

लौकिक शान्ति के पश्चात् मनुष्य को स्वभाव से ही पारलौकिक सुख की इच्छा होती है। इसलिए नचिकेता भी दूसरे वर में पारलौकिक सुख अर्थात् स्वर्गलोक की प्राप्ति का साधनभूत अग्निविज्ञान की माँग करता है। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं कि बालक नचिकेता स्वर्गसुख का इच्छुक है। जिस प्रकार उसके प्रथम वर में पिता की शान्ति कामना है उसी प्रकार उसके द्वितीय वर में मनुष्यमात्र की हितचिन्ता है। उसके हित में बालक नचिकेता का भी हित है। वह स्वयं स्वर्गसुख के लिए लालायित नहीं है। इस बात की पुष्टि यमराज के साथ नचिकेता के वार्तालाप से हो जाती है।

नचिकेता का द्वितीय वर परलोक विषयक है। इस वर में नचिकेता ने आचार्य यम से स्वर्ग की साधनभूत उस अग्नि के बारे में जानना चाहा है कि जिसको जानकर मनुष्य स्वर्गलोक की प्राप्ति कर लेता है। जहाँ पहुँचकर वह सांसारिक दुःखों और कष्टों से पृथक् होकर शान्ति, प्रसन्नता एवं आनन्द की अनुभूति करता है :—

स त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो,
प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त
एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥

इस वर के साथ यमाचार्य ने नचिकेता को अपनी ओर से एक और वर प्रदान करते हुए कहा कि 'संसार में यह अग्नि तुम्हारे नाम से जानी जाएगी'।

नचिकेता के द्वारा याचित तृतीय वर आनन्दलोक प्राप्ति विषयक है। नचिकेता का प्रथम वर पितृपरितोष विषयक इहलौकिक है। द्वितीय वर परलोक अर्थात् स्वर्गलोक की प्राप्ति का साधनभूत अग्नि-विज्ञान के सम्बन्ध में है और तृतीय वर परलोक-आनन्दलोक की प्राप्ति विषयक है। इस भाँति द्वितीय तथा तृतीय दोनों ही वर परलोक विषयक हैं। दोनों की प्राप्ति में अन्तर केवल यही है कि यजादि-कर्मजन्य-स्वर्गलोक में जीवात्मा शोक आदि से रहित होकर

परमसुख की अनुभूति किया करता है तथा परमधाम (मुक्तावस्था) में वह परमात्मा के आनन्द की अनुभूति किया करता है।

उस आनन्द की अनुभूति का एकमात्र साधन आत्म-तत्व विषयक ज्ञान की उपलब्धि करना ही है। इसी ज्ञान को दूसरे शब्दों में ब्रह्मविद्या अथवा ब्रह्मज्ञान कहा गया है। जन्म-मृत्यु अथवा आवागमन के बन्धन से छुटकारा प्राप्त करना ही मानव-जीवन का उद्देश्य है। इस छुटकारे की प्राप्ति के अनन्तर ही जीवात्मा को परमात्मा के आनन्द की अनुभूति हुआ करती है। अतः उक्त आनन्द की प्राप्ति विषयक आत्मज्ञान सम्बन्धी वर की याचना नचिकेता द्वारा इस तृतीय वर में की गयी है—

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽ-
स्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं
वराणामेष वरस्तृतीयः॥

नचिकेता के द्वारा आत्मा के अस्तित्व के बारे में जो वर माँगा गया है उसका स्पष्ट भाव आत्मज्ञान की प्राप्ति करना ही है। वह आत्म तत्व के वास्तविक स्वरूप और तद्विषयक ज्ञान को आचार्य यम से प्राप्त करने का इच्छुक था। अतएव इसी मन्तव्य को ध्यान में रखते हुए उसने तृतीय वर की याचना की है।

इस तृतीय वर में आत्मतत्त्व विषयक नचिकेता के प्रश्न को सुनकर यमाचार्य ने कहा कि-पहले देवताओं ने भी इस विषय में सन्देह किया था। यह सरलता से जानने योग्य विषय नहीं है। अतः तुम इस तृतीय वर के उपलक्ष्य में कुछ और माँग लो।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः।
अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम्॥

इस प्रकार कहते हुए यमाचार्य ने अनेकों प्रकार से सांसारिक वस्तुओं आदि के प्रलोभनों द्वारा नचिकेता को सन्तुष्ट करना चाहा और साथ ही यह भी देखना चाहा कि वस्तुतः नचिकेता आत्म-

ज्ञान का अधिकारी है या नहीं। इसी आधार पर नचिकेता की पूर्णरूप से परीक्षा ली गयी तथा वह उस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और उसने कहा—

"वरस्तु मे वरणीयः स एव।"

क्योंकि इस वर के समान अन्य कोई दूसरा वर है ही नहीं—

"नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित्।"

अन्त में जब यमाचार्य ने देखा कि नचिकेता लौकिक एवं पारलौकिक भोगों से सर्वथा उदासीन है, उसमें पूर्ण विवेक विद्यमान है, वह शम-दमादि साधनों से सर्वथा सम्पन्न है तथा उसमें तीव्र मुमुक्षा की प्रज्वलन अग्नि तीव्रता से धधक रही है तो उन्होंने नचिकेता को आत्मज्ञान का अधिकारी स्वीकार कर लिया और तत्पश्चात् उसे आत्मतत्त्व सम्बन्धी पूर्णज्ञान प्रदान किया।

मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य आत्मदर्शन ही है। भगवान् का साक्षात्कार हो जाना ही आत्मदर्शन है। इस साक्षात्कार के लिए साधनभूत आत्मज्ञान का ज्ञान नचिकेता को प्राप्त हो गया। यह ज्ञानवर्षा ही सम्पूर्ण लोकों का कल्याण करने के लिए आज भी कठोपनिषद् के रूप में विद्यमान है लेकिन उससे विशुद्ध बोधरूप अंकुर तो उसी हृदय में प्रस्फुटित हो सकता है जो नचिकेता के सदृश साधनचतुष्टय सम्पन्न है। परम उदार पयोधर जल तो सभी स्थलों पर बरसाते हैं परन्तु उसके परिणाम विभिन्न भूमियों के योग्यतानुसार विभिन्न होता है। ठीक यही बात शास्त्रोपदेश के विषय में भी है। शास्त्रकृपा तथा ईश्वरकृपा तो सभी पर समान है। परन्तु आत्मकृपा की न्यूनाधिकता के कारण उससे होने वाले परिणामों में अन्तर रहता है।